International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 857-859

सार्क के बदलते परिवेश में दक्षिण एशिया विश्वविद्यालय का स्वरूप

अनिल कुमार यादव
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

दक्षिण एशिया विश्वविद्यालय का विचार प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने रखा था और इस संस्थान की स्थापना के लिए औपचारिक समझौते पर हस्ताक्षर 2007 में नई दिल्ली में आयोजित सार्क के 14वें शिखर सम्मेलन के दौरान हुए। भारत के तत्कालीन विदेश मंत्री प्रणव मुखर्जी ने 2008 में दिल्ली के महरौली स्थित मैदान गढ़ी में एसएयू की आधारशिला रखी। मानव संसाधन के उत्कृष्ट इस्तेमाल के बगैर आर्थिक और सामाजिक प्रगति की कल्पना भी नहीं की जा सकती और शिक्षा जिसके लिए अनिवार्य शर्त है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए सार्क ने शिक्षा की महत्ता को समझा और एक ऐसे विश्वविद्यालय की स्थपना की जरूरत महसूस की गई जो भावी पीढ़ी में दक्षिण एशियाई चेतना भर सके। यह विश्वविद्यालय आज हकीकत बन गया है। क्षेत्र के बारे मे ज्ञान और विशेषज्ञता का एक जगह जमा होना न केवल एक क्षेत्रीय अकादमिक बेहतरी का केन्द्र बनाएगा बल्कि यह क्षेत्र में शांति, सहयेाग, मैत्री और सौहार्द्र को भी बढ़ावा देगा। छात्रों को एक नियमित विश्वविद्यालय में बौद्धिक चर्चा का हिस्सा होने एक जैसी संस्कृति और परंपरा के छात्रों के साथ साझा करने का मौका मिलेगा। सार्क के शिखर नेतृत्व ने 1997 में माले सम्मेलन के दौरान स्वीकार किया कि दक्षिण एशिया के मानव संसाधान के विकास की सबसे बड़ी बाधा अशिक्षा है और यही क्षेत्र के आर्थिक पिछड़ेपन और सामाजिक असमानता की सबसे बड़ वजह भी है। सार्क के एजेंडे में शिक्षा 1989 में शिक्षा पर एक तकनीकी समिति के गठन के बाद शामिल हुआ। 1989 में कार्रवाई पर एकीकृत कार्यक्रम की मंजूरी के बाद यह विषय मानव संसाधन विकास पर तकनिकी समिति के दायरे में आया। इसके बाद एक सार्क चेयर, फैलोशिप और छात्रवृत्ति योजना शुरू हुई। पाठ्यक्रमों की आपसी स्वीकार्यता बढ़वा क्रेडिट के हस्तांतरण को बढ़वा देने को ध्यान में रख कर सार्क कसोर्टियम ऑफ ओपन डिस्टेंस लगिंग बनाया गया। सार्क के शिक्षकों का मंच स्थापित किया गया। शिक्षा को युद्ध की संस्कृति की जगह शांति की संस्कृति में बदलाव, लोकतंत्र और सकारात्मक विकास के महत्वपूर्ण औजार के रूप में देखा गया। सार्क के सभी आठों देशों की सरकारों, शिक्षा विकास संस्थनों, अध्येताओं के साथ–साथ अंतर–सकारी समितियों और विभिन्न टास्क फोर्सो के सदस्यों को दक्षिण एशिया विश्वविद्यालय के लिए गहरे लगाव और प्रतिबद्धता के साथ काम करते हुए देखना बेहद संतोषप्रद था। यह सार्क के इतिहास का अभूतपूर्ण अवसर था जब भारत, पाकिस्तान समेत आठों देशों से शिक्षा जगत की हस्तियां विभिन्न समितियों या टास्क फोर्स में आराम से एक दूसरे के साथ बैठक पूरी तन्मयता से एसएयू की कार्ययोजना अंतिम रूप दे रहे थे। एसएयू के लिए सिद्धांत पत्र तैयार करने का जिम्मा हवाई विश्वविद्यालय एएसएच इंस्टिटयूशन ऑफ डेमोक्रेटिक गवर्नेस एंड इनोवेशन्स के पूर्व डायरेक्टर गौहर रिजवी को सौंपा गया। उन्होने सुझाव दिया कि एसएयू सरकार वित्त पोषित और निजी शैक्षणिक संस्थान के बीच की राह अपनाए। उन्होने यह सुझाव सुविधाहीन वर्ग के प्रतिप्रबद्धता निभाने में एसएयू को नौकरशाही के चंगुल से मुक्त रखने को ध्यान में रख कर दिया। उनकी रिपोर्ट में एक आवासीय विश्वविद्यालय के बार में भी बात की गई जहां लोकतांत्रिक विचार, सहिष्णु वैश्विक विचार, बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण और महत्वपूर्ण और वैचारिक मस्तिष्क की रचना हो सके। सार्क के सभी देशों में कई चर्चाओं के बाद उन्होंने अपनी रिपोर्ट तैयार कर सार्क देशों की सरकारों को इस पर अपना मंतव्य देने के लिए सौंपा। इसके बाद दक्षिण एशिया विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए 4 अप्रैल 2007 को 14वें सार्क शिखर सम्मेलन के दौरान नई दिल्ली में एक अंतर–मंत्रालय समझौते पर हस्ताक्षर हुए। तत्कालीन विदेश सचिव शिवशंकर मेनन की अध्यक्षता में हुई बैठक में कई लब्धप्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थाओं यूजीसी, आईसीसीआर, जेएनयू, डीयू, सीआईआईएल और राजीव गांधी फाउडेशन को बुलाया गया था। एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया गया था जिसकी बैठक 8–9 मार्च 2007 को नई दिल्ली में हुई थी। अंतर सरकारी समझौता सबसे पहले विदेश मंत्रियों ने मार्च के आखिरी में मंजूर किया और बाद में इस पर सरकार के प्रमुखों ने सहमति की मुंहर लगाई। अतंर सरकारी संचालन दल की पहली बैठक 19–30 मई 2007 को नई दिल्ली में हुई।

बुनियादी ढांचा का निर्माण

इस विश्वविद्यालय के परिसर का निर्माण कार्य 2012 के आखिर में शुरू किए जाने की योजना है। एसएयू के लिए पूंजीगत खर्च भारत सरकार वहन करेगी, जबकि इसके संचालन का खर्च सार्क के सभी देश मिलकर उठाएंगे। विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं, शैक्षणिक फाउंडेशनों और दान से भी कोष जुटाएगा। सार्क संचालन समिति ने अपना काम खत्म कर लिया है और विवि के नियम कायदे, अकादमिक ढांचा और कामकाज की योजना तैयार है। जवाहारलाल नेहरू वि0वि0 अपने परिसर में फिरहाल इस वि0वि0 को अस्थायी जगह मुहैया कराई है। स्थायी एसएयू के लिए अंतर्राष्ट्रीय डिजाइन वाले परिसर का काम अभी चल रहा है।

दक्षिण एशिया के छात्रों के उपलब्ध होगी विश्वस्तरीय शिक्षा

दक्षिण एशिया विश्वविद्यालय छात्रों को विश्वस्तरीय शिक्षा मुहैया कराने की कोशिश करेगा। विश्वविद्यालयी शिक्षण में नवीनतम अंतर्राष्ट्रीय परिमाटी यथा विभिन्न शिक्षण और शैक्षणिक माध्यमों से विषयों का चयन के रूप में इस काम को अंजाम दिया जाएगा। विश्वविद्यालय के मुख्य लक्ष्य में अकादमिक कार्यक्रमों के एकत्रीकरण के जरिए प्रसंगिकता सुनिश्चित की जाएगी। दुनिया के ख्यातिलब्ध अध्येताओं को शिक्षण, अनुसंधान और समीक्षा में शामिल कर गुणवत्ता सुनिश्चित की जाएगी। सार्क के सदस्य देशों द्वारा तय दक्षिण एशिया विश्वविद्यालय की नियमावली के मुताबिक यह

विश्वविद्यालय दक्षिण एशियाई समुदाय में ऐसी शिक्षा को बढ़ावा देगा जो एक–दूसरे के दृष्टिकोण को समझने में मददगार होगी और क्षेत्रीयता की भावना को मजबूती प्रदान करेगा। दक्षिण एशिया के मेधावी और अत्यंत समर्पित छात्रों को उदार और मानवीय शिक्षा मुहैया कराएगा ताकि एक नए गुणों से लैस नेतृत्व का विकास हो सके और दक्षिण एशियाई देशों की विज्ञान, तकनीकी एवं जीवन स्तर को सुधारने वाले शिक्षा के अन्य क्षेत्रों में क्षमता में वृद्धि हो सके। एसएयू ने अपने पहले शैक्षणिक सत्र की शुरूआत 50 छात्रों के साथ 2010 से शुरू किया। नियम के मुताबिक मेजबान देश भारत को 50 प्रतिशत से ज्यादा सीटें नहीं दी जा सकती और किसी भी सदस्य देश को 4 प्रतिशत से कम सीटे नही दी जा सकती। खाली सीटें सबसे पहले छोटे देशों को दी जायेगी और फिर खाली रहने पर मेजबान देश को वें सीटें मिलेंगी। एसएयू का प्रशासनिक कार्यालय जेएनयू के पुस्तकालय भवन में बनाया गया है। एसएयू का परिसर सार्क के सभी आठों सदस्य देशों में होगा। इस विश्वविद्यालय में मुख्य रूप से सार्क के आठों सदस्य देशों से छात्र लिए जाएंगे। शिक्षण शुल्क में भारी छूट दी गई है। सार्क देशों से बाहर के देशों के भी कुछ छात्र लिए जाएंगे जिनसे पूरा खर्च वसूल किया जाएगा। इस विश्वविद्यालय में अधिकांश शिक्षक भी सार्क देशों के ही होंगे, लेकिन 20 प्रतिशत शिक्षक अन्य देशों के भी होंगे। प्रतिभाओं को आकर्षित करने के लिए आकर्षक वेतन और अन्य लाभ पैकेज तैयार किया गया है।

विश्वविद्यालय के लक्ष्य

इस विश्वविद्यालय का लक्ष्य समझदारी की संस्कृति और क्षेत्रीय चेतना का निर्माण, उदार, उज्ज्वल और वेहतर नेतृत्व वाले नए वर्ग का पोषण और विज्ञान, तकनीकी में क्षेत्र की क्षमता बढ़ाने के साथ ही जीवन स्तर को ऊंचा उठाने वाली ज्ञान की अन्य शाखाओं में क्षेत्र को विशिष्टता दिलाना ही दक्षिण एशिया विश्वविद्यालय का मुख्य लक्ष्य है। एसएयू अनुसंधान एवं स्नातकोत्तर स्तरीय शैक्षणिक कार्यक्रमों पर ध्यान देगा और विज्ञान एवं गैर विज्ञान के 12 स्नातकोत्तर विभाग होंगे। इसके अलावा अंतरस्नातक का एक छोटा विभाग भी होगा। साउथ एशियन स्टडीज का एक ध्जवाहक इंस्टीट्यूट भी स्थापित किय जाएगा। पूरी क्षमता में आने के बाद विश्वविद्यालय में 7000 छात्र और 700 शिक्षक होंगे। यह सार्क के सभी आठों देशों का संयुक्त प्रयास है और अपने आप में यह अकेला ऐसा विश्वविद्यालय होगा जहां आठ देशों के छात्र और शिक्षक एक साथ मिलकर शिक्षण, काम और अनुसंधान करेंगे। यह भरोसा किया जा रहा है कि इससे सार्क को प्रभावित करने वाले आर्थिक, सांस्कृतिक, पर्यावरर्णीय एवं राजनीति से जुड़े मुद्दों का समाधान तलाशने में मदद मिल सकेगी। एसएयू के लिए प्रारंभिक निवेश भारत ने किया है। सार्क के सभी देश संचालन खर्च जुटाएंगे और विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों व अन्य स्रोतों से धन भी जुटाएगा।

एएसयू को क्षेत्र में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बनाने, क्षेत्र में और क्षेत्र से बाहर बेहतरीन अकादमिक कामकाज का लक्ष्य, बेहतरीन विचार और अनुसंधान कार्य जो सीधे तौर पर एसएयू के लक्ष्यों की प्रासंगिकता से जुड़ा हो को एसएयू प्रतियोगी प्रेरकों और सुविधाओं के जरिए सुनिश्चित करेगा। एसएयू का मानना है कि विविधता की सार्थक समझदारी को प्रोत्साहन, संबद्धता का निर्माण और सहिष्णुता को प्रोत्साहन देने का ज्ञान सबसे शक्तिशाली जरिया है। जहां ऐसा ज्ञान संचित, उत्पादित और प्रचारित हो सके वह मंच मुहैया करा कर दक्षिण एशिया विश्वविद्यालय क्षेत्र की साझी जमीन और सामाजिक आर्थिक विकास की धुरी बनाना चाहता है। इसलिए एसएयू अध्ययन के लिए ऐसे पाठ्यक्रम मुहैया कराना चाहता है जिससे क्षेत्रीय समझदारी, शांति और सुरक्षा की भावना के विकास की संभावना भरी हो। इससे अंततः क्षेत्र के लोगों की भलाई को बढ़ावा मिल सके। ऐसा पाठ्यक्रम जिससे दक्षिण एशिया में विभिन्न विषयों में साझा और चुनौतीपूर्ण नई खोज तक पहुंच, अंतर्विषयक संस्थान, जिसका आम तौर पर किसी एक देश में अभाव रहता है और ऐसे ज्ञान की रचना और सझेदारी जो दक्षिण एशियाई समुदाय को बौद्धिक, आपसी विश्वास और एक–दूसरे की समस्या के प्रति संवेदनशील के साथ–साथ उदार बनाने में मददगार साबित हो।

अंतर्विषयक अनुसंधान केन्द्र

आज की दुनिया में चाहे अत्यंत सूक्ष्म अनुसंधान का प्रश्न हो या फिर किसी वेश आ रही समस्या के समाधान की तलाश, अनुसंधान प्रयास बहु–विषयक होना चाहिए। विशेष अंतर्विषयक अनुसंधान केन्द्र इस लिहाज से एसएयू का हॉलमार्क साबित होगा। बहु आधार क्षेत्र में विशेषज्ञता का प्रावधान अंतर्विषयक प्रयासों में तेजी को सुनिश्चित करेगा। एसएयू इस विश्वविद्यालय से स्नातकों को अत्यंत विक्रययोग्य और क्षेत्र के साथ ही अंतर्राष्ट्रीय नौकरियों के लिए जरूरी कैशल से लैस होना सुनिश्चित करेगा। आला क्षेत्रों में विशेषज्ञता खास कौशल के लिए एसएयू के ब्रान्ड पहचान को स्थापित करेगा और इसके बदले इस क्षेत्र के युवाओं को रोजगार के पर्याप्त अवसर का लाभ मिल सकेगा। एसएयू पूर्व के बौद्धिक उद्यम के महत्व पर जोर देगा और यह सुनिश्चित करेगा कि मानवीय आकांक्षाएं पश्चिमी मुहर की मोहताज नहीं रहेंगी। यह उम्मीद की जाती है कि समय के साथ सृजनात्मक ज्ञान के वाहक के रूप में उभरेगा। यह प्रतिष्ठा एशियाई दर्शन अनुभव और परंपराओं पर आधारित होगा जिसे समकालीन पश्चिमी पाठ्यक्रम में शायद ही पर्याप्त जगह मिल पाती है। यह क्षेत्रीय सहयोग और विकास के सुदृढीकरण में शैक्षणिक संपर्क की क्षमता को भी रेखांकित करेगा। सार्क के विभिन्न देशों से आयें छात्रों के बीच मैत्री से लाभ पहुंचेगा। वे एक साथ हंस–बोल सकेंगे, एक साथ अध्ययन करेंगे और एक साथ रहेंगे। ऐसा सकारात्मक संपर्क परंपरागत ज्ञान को सुदृष्ढ करने उद्यम और प्रतिभा के साथ–साथ नई रचनात्मकता, अन्वेषण और अनुसंधान के जरिए दक्षिण एशियाई समुदाय को उच्चस्तर की उत्पादकता और वैभव संरचना वाले समुदाय में बदलने में मददगार होगा। एक बार जब यह उर्वरता अस्वीकार करने और वंचित करने के बोध को शांति और संपन्नता के लिए साझीदारी के केन्द्र में बदलना शुरू कर देगा। तो राजनीति, अर्थशास्त्र, धर्म या परंपरा के औजार के रूप में हिंसा का सहारा लेने वालों के लिए कोई जगह नहीं बचेगी।

मूल्यांकन

बौद्धिकता की असली परीक्षा उम्मीदो की नई कला या विज्ञान के जरिए क्षेत्र को गरीबी, और विवाद से बाहर शांति और विकास की राह पर ले जाने में है। दक्षिण एशिया को एक ऐसी नई चेतना की दरकार है जो विचार उत्पन्न कर सके और संस्थान का निर्माण कर सके। ऐसा संस्थान जो सभी दक्षिण एशियाई को एक वृहत्तर मानवीय परिवार के भीतर भाई और बहन के रूप में मानते हुए उसकी जरूरतों और अभिलाषाओं का बेहतर वाहक हो। एसएयू अपने स्नाताकों को अत्यंत विक्रययोग्य और क्षेत्र व अंतर्राष्ट्रीय रोजगार बाजार के लिए प्रासंगिक कौशल से लैस होना सुनिश्चित करेगा। इन आला क्षेत्रों में विशेषज्ञता खास कौशल के लिए एसएयू के ब्रांड पहचान को सुनिश्चित करेगा और इसके बदले में क्षेत्र के युवाओं को रोजगार के पर्याप्त अवसर मुहैया हो सकेगा।

विश्वविद्यालय ऐसे जागरूक विद्वानों को उत्पन्न करने में सक्षम होगा जो संपूर्ण मानवता और खास तौर से दक्षिण एशिया के लोगों की एकजुटता की आधारशिला रखते देंखे जा सकेंगे। हमारा क्षेत्रीय और वैश्विक शांति एवं विकास के स्थायित्व के लिए अत्यंत प्रभावशाली बल के रूप में उभरेगा।

सन्दर्भ

1. मोहम्मद जमशेद इकबाल, : 'सार्कः ओरिजिन, ग्रोथ, पोटेंसियल एण्ड एचीवमेंट्स' पाकिस्तान जर्नल ऑफ हिस्ट्री एण्ड कल्चर, भाग xxxvii संख्या–2, 2006, पृ0 133
2. स्मृति एस0 पटनायक, मेकिग सेंस ऑफ रिजनल कोऑपरेशन स्ट्रैटेजिक एनालिसिस भाग–30, सं0 1, जनवरी,2012
3. पाड़ियन, एस0जी0 : 'मुविग साउथ एशियास इकोनामीज वियाड दि इड़ो–पाक पैराइडम इन सार्क', कन्टेम्पोररी साऊथ एशिया, वॉल्यूम नवम्बर 3, 2012, पृ0 329
4. South Asian University dream to turn real by 2010 India Edunews, May 26, 2008, retrieved on February 10, 2012.
5. SAARC University takes off in India Digital Learning, 28 May 2008, Retrieved on February 14, 2012.
6. India would provide 50, SAARC Silver Jubilee Scholarships, for the South Asian University, April 28, 2010.\
7. Non-profit model mooted for South Asian University the Hindu, December 29, 2006.